गद्यांशों पर आधारित प्रश्नोत्तर (अतिलघु/लघु उत्तरीय प्रश्न)

निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर उन पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए (2 + 2 + 1 = 5 अंक)

1 वह नेपाल से तिब्बत जाने का मुख्य रास्ता है। फरी-कलिङ्पोङ् का रास्ता जब नहीं खुला था, तो नेपाल ही नहीं हिंदुस्तान की भी चीज़ें इसी रास्ते तिब्बत जाया करती थीं। यह व्यापारिक ही नहीं, सैनिक रास्ता भी था, इसलिए जगह-जगह फ़ौजी चौकियाँ और किले बने हुए हैं, जिनमें कभी चीनी पलटन रहा करती थी। आजकल बहुत से फौज़ी मकान गिर चुके हैं। दुर्ग के किसी भाग में, जहाँ किसानों ने अपना बसेरा बना लिया है, वहाँ घर कुछ आबाद दिखाई पड़ते हैं। ऐसा ही परित्यक्त एक चीनी किला था। हम वहाँ चाय पीने के लिए ठहरे। तिब्बत में यात्रियों के लिए बहुत-सी तकलीफ़ें भी हैं और कुछ आराम की बातें भी। वहाँ जाति-पाँति, छुआछूत का सवाल ही नहीं है और न औरतें पर्दा ही करती हैं।

प्रश्न

I. तिब्बत मार्ग में क्या-क्या था? उनका वर्णन कीजिए। (2)

II. तिब्बत के सामाजिक जीवन का चित्रण कीजिए। (2)

III. 'परित्यक्त' शब्द का वर्ण-विच्छेद कीजिए। (1)

उत्तर

I. तिब्बत मार्ग पर जगह-जगह फ़ौजी चौकियाँ और किले थे, जिनका प्रयोग कभी चीनी पलटन द्वारा किया जाता था। अब बहुत-से मकान गिर चुके थे और किले के टूटे भागों में किसान रहने लगे थे।

II. तिब्बत के सामाजिक जीवन में समानता की विशेषता देखने को मिलती है, क्योंकि उस समाज में जाति-पाँति, छुआछूत और पर्दा-प्रथा नहीं थी। तिब्बत के लोग बिना भय के रहते थे।

III. प् + अ + र् + इ + त् + य् + अ + क् + त् + अ = परित्यक्त

2 यह व्यापारिक ही नहीं, सैनिक रास्ता भी था, इसलिए जगह-जगह फौज़ी चौकियाँ और किले बने हुए हैं, जिनमें कभी चीनी पलटन रहा करती थी। आजकल बहुत से फौज़ी मकान गिर चुके हैं। दुर्ग के किसी भाग में, जहाँ किसानों ने अपना बसेरा बना लिया है, वहाँ घर कुछ आबाद दिखाई पड़ते हैं।

प्रश्न

I. इस गद्यांश में किस रास्ते का वर्णन है? (2)

II. उपरोक्त रास्ते के महत्त्व को रेखांकित कीजिए। (2)

III. बदली हुई परिस्थितियों में इस क्षेत्र की स्थिति स्पष्ट कीजिए। (1)

उत्तर

I. प्रस्तुत गद्यांश में नेपाल से तिब्बत जाने के मुख्य रास्ते का वर्णन है। फरी-कलिङ्पोङ् का रास्ता खुलने से पहले इसी रास्ते से नेपाल के साथ-साथ हिंदुस्तान की चीज़ें भी तिब्बत जाया करती थीं।

II. यह रास्ता व्यापार करने की दृष्टि से तो महत्त्वपूर्ण था ही, इसके साथ-साथ यह सैनिक रास्ता होने के कारण सुरक्षा की दृष्टि से भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण था। इस रास्ते में चीनी सेना अपने उपकरणों एवं हथियारों के साथ रहा करती थी।

III. बदली हुई परिस्थितियों में इस क्षेत्र का अब अधिक महत्त्व नहीं रह गया है। अनेक फौज़ी मकान गिर गए हैं। चीनी पलटनें अब वहाँ से चली गई हैं।

3 परित्यक्त चीनी किले से जब हम चलने लगे, तो एक आदमी राहदारी माँगने आया। हमने वह दोनों चिटें उसे दे दीं। शायद उसी दिन हम थोङ्ला के पहले के आखिरी गाँव में पहुँच गए। यहाँ भी सुमति के जान-पहचान के आदमी थे और भिखमंगे रहते भी ठहरने के लिए अच्छी जगह मिली। पाँच साल बाद हम इसी रास्ते लौटे थे और भिखमंगे नहीं, एक भद्र यात्री के वेश में घोड़ों पर सवार होकर आए थे; किंतु उस वक्त किसी ने हमें रहने के लिए जगह नहीं दी और हम गाँव के एक सबसे गरीब झोंपड़े में ठहरे थे। बहुत कुछ लोगों की उस वक्त की मनोवृत्ति पर ही निर्भर है, खासकर शाम के वक्त छङ् पीकर बहुत कम होश-हवास को दुरुस्त रखते हैं।

प्रश्न

I. थोङ्ला में लेखक को ठहरने का अच्छा स्थान मिलने के कारण बताइए। (2)

II. शाम के वक्त गाँव के लोगों के होश-हवास ठीक नहीं रहने का कारण बताइए। (2)

III. परित्यक्त चीनी किले से जब हम चलने लगे, तो एक आदमी राहदारी माँगने आया। वाक्य का प्रकार बताइए। (1)

उत्तर

I. थोङ्ला में सुमति के जान-पहचान के लोग होने के कारण लेखक को ठहरने के लिए अच्छा स्थान मिल गया। वे लोग भिखमंगों की वेशभूषा में थे, इस कारण भी उन्हें रहने के लिए अच्छा स्थान मिल गया।

Scanned with CamScanner

II. शाम के वक्त गाँव के लोग 'छङ्' नामक मादक द्रव्य पीकर अपने होश-हवास को ठीक नहीं रख पाते हैं। उस अवस्था में वह व्यक्ति में भेद नहीं कर पाते थे कि वह साधारण आदमी है या कोई भिखमंगा व्यक्ति है।

III. मिश्र वाक्य।

4 तिब्बत में गाँव में आकर खून हो जाए, तब तो खूनी को सज़ा भी मिल सकती है, लेकिन इन निर्जन स्थानों में मरे हुए आदमियों के लिए कोई परवाह नहीं करता। सरकार खुफ़िया-विभाग और पुलिस पर उतना खर्च नहीं करती और वहाँ गवाह भी तो कोई नहीं मिल सकता। डकैत पहले आदमी को मार डालते हैं, उसके बाद देखते हैं कि कुछ पैसा है कि नहीं। हथियार का कानून न रहने के कारण यहाँ लाठी की तरह लोग पिस्तौल, बंदूक लिए फिरते हैं। डाकू यदि जान से न मारे, तो खुद उसे अपने प्राणों का खतरा है। गाँव में हमें मालूम हुआ कि पिछले ही साल थोङ्ला के पास खून हो गया। शायद खून की हम उतनी परवाह नहीं करते, क्योंकि हम भिखमंगे थे और जहाँ-कहीं वैसी सूरत देखते, टोपी उतार जीभ निकाल, "कुची-कुची (दया-दया) एक पैसा" कहते भीख माँगने लगते। लेकिन पहाड़ की ऊँची चढ़ाई थी, पीठ पर सामान लादकर कैसे चलते? और अगला पड़ाव 16-17 मील से कम नहीं था। मैंने सुमति से कहा कि यहाँ से लङ्कोर तक के लिए दो घोड़े कर लो, सामान भी रख लेंगे और चढ़े चलेंगे।

प्रश्न

I. लेखक ने डाकुओं से बचाव के लिए कौन-सा साधन अपनाया? (2)

II. अगला पड़ाव कितनी दूर था? वहाँ जाने के लिए लेखक ने क्या प्रबंध किया? (2)

III. 'घोड़े' का तत्सम रूप लिखिए। (1)

उत्तर

I. लेखक ने भिखमंगे का वेश धारण किया हुआ था। कोई भी खतरनाक सूरत देखते ही वह टोपी उतारकर, जीभ निकालकर 'कुची-कुची' (दया-दया) कहकर पैसा माँगने लगता था।

II. अगला पड़ाव 16-17 मील दूर था। वहाँ जाने के लिए लेखक ने स्वयं जाने तथा सामान ले जाने के लिए सुमति से दो घोड़ों का प्रबंध करने के लिए कहा।

III. घोटक।

Scanned with CamScanner